पाठ - 7 आज़ादी

कवि - बालचन्द्रन चुल्लिक्काड

अनुवाद - असदज़ैदी

प्रस्तावना

आप कभी–कभी यह सोचते होंगे कि कितना अच्छा होता यदि आपको अपने ढंग से जीने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाता। जब कभी आपको कोई टोकता है, तो आपको बुरा लगता होगा। आप शायद नाराज भी होते होंगे उस पर। आप यह भी जानते ह कि कुछ पाने लिए मेहनत आवश्यक है। कुछ बनने के लिए अनशासन जरूरी है। आज जिसे आप **आज़ादी** समझ रहे ह, वह कल अनुशासन के अभाव में बंधन बन सकती है। किसी भी व्यक्ति के लिए **आज़ादी** के क्या मायने होते **हैं?** आइए इन सवालों से परिचित होने के लिए मलयालम के प्रतिनिधि कवि बालचंद्रन चुल्लिक्काड़ की कविता का अनुभव करें।

''उस्ताद जी, **आज़ादी** क्या होती है?''

–पूछा दर्जी से उसके शागिद ने,

"क्या वह **चारागाह** में उछल–कूद मचाता

नन्हा–सा बछड़ा है?

या सूरज में घोंसला बनाने को

उड़ी जाती चिड़िया?

या उत्तर दिशा में दौड़ती सीटी बजाती

रेलगाड़ी?

या अधरे में चलता मुसाफिर जिसकी कामना करता है

वह लैंपपोस्ट?

निश्चित नींद?

या इस **अनंत** कपड़े, शाश्वत रूप से गतिमान पहिए

और कभी न रूकने वाली सुई से मेरी मुक्ति?

दर्जी ने जवाब दिया:

''आजादी का मतलब है– भूखे को खाना

प्यासे को पानी

ठंड से ठिठुरते को ऊनी कपड़ा, और

थके–मादे को बिस्तर।

आज़ादी कवि के लिए शब्द है,

शिकारी के लिए तीर,

तन्हाई के मारे के लिए महफिल है,

डरे हुए के लिए पनाह,

आज़ादी याने ज्ञानी को ज्ञान,

ज्ञानी को कर्म, कर्मठ को बलिदान

और बलिदानी को जीवन।

आज़ादी वह फसल है जिसे

बोनेवाला ही काट सकता है,

वह रोटी, जिसे मेहनती ही खा

सकता है,

यह वह कपड़ा है, जिसे दर्जी ही

पहन सकता है,''

यह कहकर दर्जी फिर से कपड़े सीने लगा।

शागिद की उलझन दूर हुई और

वह सुई में धागा पिरोने **लगा**।

व्याख्या

1. उस्ताद जी.....और बलिदानी को जीवन।

संदर्भः—प्रस्तुत **पंक्तियाँ** हमारी पाठ्यपुस्तक हिन्दी भाग 1 से ली गई है। जिसके कवि बालचंद्रन चुल्लिक्काड़ **हैं |** यह कविता मलयाली भाषा की है जिसका हिन्दी अनुवाद असद जैदी जी ने किया है।

प्रसंगः— प्रस्तुत पंक्तियों में एक दर्जी की दुकान में काम करने वाला लड़का अपने उस्ताद से आजादी के विषय में पूछ रहा है कि आजादी किसे कहते है।

व्याख्याः—इस कविता में दर्जी से उसके शागिद ने पूछा कि आजादी का क्या अर्थ है? वह अनेक सवाल करते हुए आजादी का अर्थ जानना चाहता है। उसने अपने **गुरु** के सामने जिज्ञासा रखी कि क्या चारागाह में नन्हें से बछड़े द्वारा उछलकूद मचाना खुश रहना आजादी है? असम्भव काम को करना आजादी **है कि** कहीं उत्तर दिशा में सीटी बजाते हुए तेज भागती रेलगाड़ी का नाम तो आजादी नही? फिर भी उसकी जिज्ञासाए शांत नहीं होती। वह कहता क्या घूमना—फिरना है? वास्तव में कुछ लोग खासतौर पर बारह—तेरह वर्ष की उम्र के किशोर घूमने—फिरने तथा सैर सपाटे को ही आजादी मानते **हैं** अपने अगले प्रश्न मे शार्गिद पूछता है कि क्या अंधेरे में भटकने वाले को लैंपपोस्ट मिल जाए तो आजादी है? इस तरह पाच प्रकार के सन्दर्भों का उल्लेख करने के बाद कविता का मूल बिन्दु सामने आता है। शागिर्द अपनी मुक्ति या आजादी के बारें में पूछता है कि कपड़ो के **ढेर** सिलाई मशीनों के निरंतर गतिशील हो रहे पहियों, कपड़ो पर अनवरत चलने वाली सुइयों से मुक्ति पाने का नाम तो आजादी नही है?

विशेषः— इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |

कविता के माध्यम से पता चलता है कि हमारे समाज में आजादी को अनेक संदर्भो में देखा जाता है।

अनुवाद होने के कारण कविता में लयता तथा रोचकता नहीं है।

दर्जी ने जवाब दियाः—

1. आजादी का मतलब.....पहन सकता है।

सन्दर्भः— प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक **की कविता 'आज़ादी'** से ली गई है जिसके कवि बालचन्द्रन चुल्लिक्काड़ जी है। यह एक मलयाली कविता है जिसका अनुवाद असद ज़ैदी जी ने किया है।

प्रसंगः—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से उस्ताद अपने शागिर्द की जिज्ञासाओं को शान्त करता है और आजादी क्या होती ह उसे बताता है।

व्याख्याः—दर्जी अपने शार्गिद से कहता है कि **आज़ादी** तो एक अभिव्यक्ति है जिसका माध्यम शब्द है। वह कहता है— किसी भूखे व्यक्ति को खाना खिलाना आजादी है। किसी ऐसे व्यक्ति को गरम कपड़े देना जो ठंड से ठिठुर रहा हो। वह **आज़ादी** है। किसी लेखक या कवि के लिए शब्द भण्डार **आज़ादी** है और जो शिकार करने गया है। तो उसका तीर उसकी **आज़ादी** है। यदि कोई व्यक्ति

अकेला है तो उसकी महफिल अर्थात् भीड़ में रहना **आज़ादी** है। किसी डरे–सहमें व्यक्ति को सहारा देना आजादी है। ज्ञानी का कर्म, कर्मठ व्यक्ति का बलिदान **आज़ादी** है। **आज़ादी** एक ऐसी प्रकार की फसल होती है जो इसे बोता है वही काटता है। यह वह रोटी होती है जिसे केवल मेहनत करने वाला ही खा सकता है। इस प्रकार दर्जी ने अपने शागिर्द की जिज्ञासाओं को शान्त करते हुए आज़ादी का अर्थ समझाया और वह दोनों वापस अपने काम में लग गए।

विशेषः– इसकी भाषा सरल एवं सुबोध है और पढ़ने में रुचिपूर्ण है |

आज़ादी का महत्व कई पैमानों पर बताया गया और कार्य करते रहने की शिक्षा इस कविता के माध्यम से दी गई है।

सारांश

कविता का आरंभ काम से थके शागिर्द की जिज्ञासा से होता है, **चूँकि** इस जिज्ञासा का संबंध पाठक से भी है, इसलिए यह कविता उसे आकर्षित करने की क्षमता रखती है। कविता में यह संदेश बहुत ही प्रभावशाली ढंग से दिया गया है कि आजादी या मुक्ति का अर्थ दुस्साहस, अवसरवाद या संकीर्ण सुख नहीं, बल्कि आजादी या मुक्ति का अर्थ त्याग और बलिदान से है। आज जिस आजादी को हम भोग **कर रहे हैं |** उसके पीछे भी असंख्य लोगों का त्याग बलिदान छिपा है। उनके त्याग बलिदान ने हमें जीवन दिया है। इस कविता के माध्यम से कवि अधिकार दिलाने की बात भी करते **हैं |**

आज़ादी और कर्तव्य अर्थात श्रम के महत्व को जानकर ही शागिर्द के सारे भ्रम दूर हो जाते है, और वह काम में लग जाता है। यह कविता प्रत्येक पढ़ने वाले को भी प्रभावशाली ढंग से यह प्रेरणा देती है।

जीवन परिचय

बालचंद्रन चुल्लिक्काड

जन्मः–कविवर बालचन्द्रन चुल्लिक्काड जी का जन्म् 1958 में हुआ।

रचनाएः–कविवर बालचन्द्रन मलयालम साहित्य के चर्चित रचनाकार है। इनकी प्रतिनिधि **रचनाएँ** इस प्रकार वर्णित ह।

अमावसी, पतिनेटु, कवितकत्व

भाषाशैलीः–कविवर बालचन्द्रन चुल्लिक्काड़जी की भाषा सामान्यतः मलयाली है। भाषा शैली मलयाली होने के बाद भी सरल और सहज है इसलिए अनुवाद मूल रचना का स्वाद प्रदान करती है।

साहित्य में स्थानः–कवि बालचंद्रन साहित्य के अलावा अभिनय तथा निर्देशन के क्षेत्र में भी एक उल्लेखनीय नाम है। पत्रकारिता में आपको विशेषता हासिल है।